ऑडिटोरियम, अलांयस फान्सेज़ डि दिल्ली, 72, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली में दिनांक 2 मार्च, 2009 को 1700 बजे एफएक्सबी इण्डिया सुरक्षा द्वारा प्रकाशित 'होप्स अलाइव : सर्वाइविंग एड्स एण्ड डिस्पेयर' नामक पुस्तक के विमोचन समारोह में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

आज इस समारोह में उपस्थित होकर और इस पुस्तक, जिसमें देश के विभिन्न भागों की आशा और प्रोत्साहन से संबंधित मानवीय कहानियां हैं, का विमोचन करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

एफएक्सबी इण्डिया की सफलता बहुत हद तक इसके अंतर्राष्ट्रीय मूल संस्थान की दूरदृष्टि और मिशन भावना तथा भारत के विभिन्न भागों में कार्यरत इसके उन पुरुष व महिला कार्मिकों की प्रतिबद्धता एवम् कड़े परिश्रम की देन है जो एड्स और गरीबी से जूझने तथा इससे ग्रस्त लोगों की मदद करने के राष्ट्रीय मिशन की सहायता कर रहे हैं।

एचआईवी-एड्स से उत्पन्न गंभीर जन स्वास्थ्य चुनौती की सार्थकता व्यापक रूप से स्वीकार की गई है और इससे इंकार नहीं किया जा सकता। ये चुनौतियां कई गुना बढ़ जाती हैं जब यह घटना किसी विकासशील देश की हो जहां निरक्षरता एवं निर्धनता एड्स से बचाव तथा उसका निराकरण जटिल बना देती हैं। सरकार तथा समाज द्वारा की गई सम्मिलित कार्रवाई से एड्स के फैलने की गति धीमी हुई है। परंतु इसमें काफी लंबा वक्त लगेगा जब हम इस बात के लिए संतुष्टि व्यक्त कर सकेंगे कि एड्स जैसी महामारी से युवकों एवं महिलाओं तथा उनके बच्चों के जीवन को कोई खतरा नहीं होगा।

उन प्रभावित बच्चों अथवा प्रभावित माता-पिता के कारण अनाथ हुए बच्चों तक अपनी पैठ बनाने पर विशेष ध्यान देने के कारण एफएक्सबी इंडिया के प्रयास पूर्णतया प्रशंसनीय हैं। उन्हें हाशिए पर रखे जाने के कारण न केवल उनकी जिंदगी तबाह हो जाती है, बल्कि उससे हमारे समाज और राज्यव्यवस्था पर भारी आर्थिक, सामाजिक और नैतिक बोझ भी पड़ जाता है। देश में अनेक व्यक्ति और सामाजिक संगठन आशा, स्नेहपूर्ण स्पर्श और वचनबद्धता प्रदान करने की कोशिश कर रहे हैं।

मित्रो,

जैसे ही मैंने पुस्तक में विभिन्न बच्चों की आशा और निराशा की कहानियों को पढ़ा, मैं विशेष रूप से तथाकथित 'निराश्रित लड़के और लड़कियों' की दुर्दशा से अचंभित हो गया। वे, बच्चों के उस विशिष्ट कमजोर वर्ग से संबंधित हैं जिनका कोई पारिवारिक बंधन नहीं है और जो खतरनाक व्यवसायों को करते हुए जीवन-यापन करते हैं और शोषण का शिकार होते हैं।

मैं यह भी आशा करता हूं कि इन निराश्रित बच्चों की समस्याओं को निपटाने के अधिक प्रयासों पर ध्यान दिया जाएगा और सरकार एवं समाज की संयुक्त कार्रवाई उनकी दुर्दशा को सुधारने में सफल सिद्ध होगी।

मैं पुनः एफएक्सबी इंडिया को उनके प्रयासों के लिए बधाई देता हूं और उसके सभी सदस्यों की उनके प्रयासों में सफलता की कामना करता हूं।